विद्या भवन बालिका लिद्यापीठ लखीसराय

वर्ग दशम् विषय संस्कृत विषयशिक्षक श्यामउदय सिंह

ता: 10-04-2021 (एन.सी.ई.आर.टी. पर आधारित)

- **श्लोक 2.**

  कज्जलमलिनं धूमं मुञ्चति शतशकटीयानम् ।
  वाष्पयानमाला संधावति वितरन्ती ध्वानम्।।
  यानानां पंक्तयो हयनन्ता :कठिनं संसरणम् । शुचि.....।।

- **शब्दार्था**:

  कज्जलमलिनम् –काजल की तरह काले
  धूमम् –धुएँ को
  मुञ्चति –छोड़ती हैं
  शतशकटीयानम् –सैकड़ों मोटर गाड़ियाँ
  वाष्पयानमाला - रेलगाड़ियों की पंक्तियाँ
  संधावति - दौड़ रही है
  वितरन्ती –फैलाती हुई
  ध्वानम् –शोर को
  यानानां –गाड़ियों की
  अनन्ता: -अनगिनत
  संसरणम् –चलना

- **सरलार्थ**

(आज देशभर में) सैकड़ों मोटर गाड़ियाँ काजल की तरह मैले (काले) धुएँ को छोड़ रही है।अनेकानेक रेलगाड़ियाँ चारों ओर शोर करती हुई दौड़ रही है।गाड़ियों की पंक्तियाँ अनन्त है,जिससे चलना कठिन हो गया है।इसलिए शुद्ध पर्यावरण ही हमारी शरण है।